

दि॥ नमो गद्य ऊर्ध्व यश्च यश्च नमो नमो नमो नमो
 १॥ अल्य दत्ता ॥ लोख सर्व गद्य वरु ॥ न्रिया नमो
 नमो नमो ॥ नर्यु स क नमो नमो नमो नमो ॥ अ कि
 नमो क १ नमिका नमो क ॥ सम सिंग द्यो सर्व गद्य
 वरु ॥ सम १ सर्व य यीय १ ॥ ॥ पूर्व य सु सर्वः
 गद्य वरु ॥ अल्य दित्ता न् अस सर्व व्ही स्मा न् स्मिः

नो च वा ॥ पूर्व पूर्वः पूर्वस्मात् पूर्वतः पूर्वस्मिन्
 पूर्व ॥ पूर्वदक्षिणं पूर्ववायव्यं पूर्वोऽधो ॥ स्वः स्व
 स्य अकि वदलाधिकात्रात् स्वकास्विकांति वि
 षयः ॥ ॥ स्वदादयः ॥ स्वः स्वो स्वो स्वो स्वो स्वा
 न् ॥ स्वन् स्वास्या न स्वो स्वस्मिन् स्वादि ॥ सर्वो ध
 नं स्व ॥ सन्निपातल कृत्वा स्ववर्ण्युदलनिमि

॥ किं सितस्य नाका लाभी जयजय प्रकाशमस्तु दया शुक्ति

कृत्वात् ॥ मिथ्या स्वा स्वो स्वा ॥ ॥ स्वादि ॥ नयं सक
 स्वत् स्वो स्वानि ॥ अकि स्वकः स्वका स्वकत् कर्त्त
 ॥ स्वोऽधोऽधोऽधोऽधोऽधोऽधो ॥ स्वोऽधोऽधो ॥ स्वः
 मोत् मोत् मोत् मोत् ॥ ॥ स्वादि ॥ मिथ्या सा न ना ॥ नयं
 सक ॥ न न न नानि ॥ अकि सकः सका सकत् ॥ यद
 षदः ॥ यो यो यो ॥ ॥ स्वादि ॥ मिथ्या यो यो यो ॥ ने

पुंसकं यत् यत् यानि ॥ अकि य क ४ यका यकत ॥
एतद्गणदृष्टं नृष ४ नृनो नृनं । नृनं नृनो नृनान् ॥ ००
स्यादि ॥ नृयां नृषा एत नृणा ४ ॥ नृपुंसकं एतत्
एतं नृनानि ॥ अकि नृष क ४ नृषका नृषिका च वे
इलाधिकानां ॥ नृपुंसकं एतत्कत् एतत्कं एत
कानि ॥ अर्न्वदं ४ एतं एतो एनान् दोसा ४ ॥ ए

नन एनया ४ ॥ अदत्तगद्वान् ॥ अमो अमू अ
मी अमू अमू अमून अमूनो अमूत्या अमीति
४ अमूषो अमूत्या अमीत्य ४ ॥ अमूषात् अमूत्या
अमीत्य ४ ॥ अमूषा अमूया ४ ॥ अमीषां अमूषिनः
अमूया ४ अमीषू ॥ ॥ अकि असको अमूक ४ अ
मूको अमूक कपुत्ययत्तद्वलं ॥ नृयां ॥ अमो

अम्र अम्रहा अम्रं अम्र अम्र न अम्रया अम्र
र्या अम्रतिहा अम्रो अम्रर्या अम्रर्यहा अम्र
षाहा अम्रर्या अम्रर्यहा अम्रषाहा अम्रयाहा अ
म्रषाहा अम्रषाहा अम्रयाहा अम्रषु ॥ अकि अम्र
का अम्रकं अम्रकाहा ॥ ॥ नयं सक अदहा
अम्र अम्रति पुननयि ॥ यदोयं सा तुल्यं ॥

अकि अम्रकं अम्रक अम्रकाति ॥ ॥ ॐ दम
भदस्य ॥ अयं ॐ मो ॐ म ॐ मी ॐ मो ॐ मान
अनन आर्या एतिहा अस्मि आर्या एत्यहा अस्मा
ह आर्या एत्यहा अस्य अनयाहा एषा अस्मि
न अनया एषु ॥ अक अयक ॐ मकी ॐ मकी
॥ नर्वसर्व ॥ मिथा ॥ ॐ यी ॐ म ॐ माहा ॐ

मां ॐ म ॐ मा ॥ अनया आस्थां आरुह्य अस्थौ आ
 स्थां आरुह्य अस्थां आरुह्य अस्थां अन
 यां आसां अस्थां अनया आसु ॥ अकि ॐ य
 कं ॐ म कं ॐ म का ॥ नयूं स कं ॐ दं ॐ म ॐ
 मानि पुनत्रयि ॥ ॐ दकम् ॐ म कं ॐ म कानि
 ॥ ॐ ॥ एक ग द एक व व नान ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

नि ॥ ॐ ॥

१ ला क ध्य ग य द वा रं यं ला क्ता य प त म ४ न क व

न य वा द्वा य नू द नू पा य ग त म ४ ॥ १

किं श्रवर्न को दू र द्रव नाथ कि मा स नी ग ग नू ण स नाथ ल क्ती
 क र गाय कि म सि द यं वा गी स कि न व व नी य म क ॥ उी त्या मि
 कं ग दि द द व वि चाले नी र्यं ना रा य णी य दि य ग द थ वा स र उ
 का द व ली न स वि द्यु र्नि ग ला व न स्य उ कं रि ला ग ल रि गे य ग न
 यृ धि यां ॥ ॐ ॥ वं द द व उ मा य गिं स न गुरु व द उ ग ल्का न व द
 यं न ग रू य णं मृ ग ध रं व द य सू णा य गिं वं द सूर्य स गं क वं दि
 न य णं वं द मू क धु यि यं वं द रू क उ न ग रू य व य ल व द वं द वि
 वं ग क रं ॥ ॥ ल क्ती क ल रं ग ग य ग न रं वृ णं इ व कं य रू द ग मि रं
 का नू ध यार्ग क म नी य ग रं व न य वि रं व सू द व य रं ॥

नम

न

का
कनकमनि
धीष्टा

य श्री लो क ध्य गार्या ॥

[illegible]

सप्तिकल्पनदृगलक्षणागाम
जातिकलनेभूते च उद्वेग
उपभूतलनेति ह्यस्य
मदभूतवृत्तिकलनास्य
शब्दभूतकल्पनास्य
नाथैकैकपुष्पादेजातक
वर्गावनाथैकैकपुष्पादेजातक
ननसहितवर्गावनाथैकैक
पुष्पादेजातकपुष्पादेजातक
इति उद्वेगननसहितवर्गावनाथैकैक
नसा॥

श्रीवाक्यम्
०१ रामायनाख्य
श्रीकामनाहक

म० क० न०
म० २ ल० न०
(म० ३ क० न० न०
न० ४ अ० न० न०
न० ५ क० न० न०
क० न० न० न० न०
म० ६ क० न० न० न०

श्रीवाक्य
०१ रामायणमहाकाव्य
०२ वनपर्वनाथाय
०३ रामायणमहाकाव्य

गल्लिआङ्गिआसि.
 न्दुदसङ्गिआदशान्नगिआङ्ग
 गाम
 थुलिआङ्गान्ङासा

卷之四

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

२५५ हिमसंननम्

श्री ३ सी वा यन

श्री रामः

भुवनेश्वर
सहस्र

निवर्जकं रुमागसं वृत्तं पाठं
सर्वकं शास्त्रं मित्रादिमान
वस्वले मन्त्रादवकाटं ध्वज

श्रीकृष्णाय नमः

श्री लोके शान्ता
या

२७ श्री नवसिंहाय नमः ॥

श्री न कलामका ६ नू यानका ६ नू

मानक

१ श्री ३ ग (न सा र्प न म ४)

श्रीरुग्गजादेव

नामः

नामस्ते नमः

বাহু প্রাণনাশক

स्व. कां नूय कनकम नि कतक

नमो वाक श्रीधराय

प्रमाणानुसारं द्वाचक्रानुसारं

कानकेरात्रान

२ श्रीगुरुजलधनमस्तु॥ विद्याधिसखियत्यंशुः काव्यप्रगल्भः
व० विद्यानायकभास्करचरणेऽग्रेः स्वर्गागः प्रसिद्धीर्किं न०॥
बंजनाकाः कमपूतः मन्त्रकेवाद्यमविधः॥ आत्मा राजा
युवायकाः युववृद्धरुः (॥ १॥) विष्णुः असनान्नान्म
धूलिठकाष्टनटकेथ॥ स्यादनाः स्यन्मिभमकासुथभयान
यादिभ॥ + ॥ विष० विषोविद्या० विष्यंविषोविद्यान्॥ विषय
विद्यात्यामविद्योः विद्यायविद्यात्याविषय० विद्यानेविद्यात्या

[illegible]

[illegible]

॥ श्री कामविनाश श्री लोपो श्री यः

पनिषदस्य प्रथमा द्वितीयाह यत्र वि ५ ५५ ॥ ५५ ॥ श्री ५५

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

अविद्वत्सु वृत्तान्तः



सूयिग (थो)॥ नर्व विषयिन् नीष्टुन् गन्नयाग् ०० स्यादय ४॥
उदन्व न गद्य गान स्वयिरुद ४॥ उदन्वान् उदन्व नो उदन्व न ४
उदन्व नो उदन्व नो उदन्व न ४ उदन्व नो उदन्व न ४ स्यादि ॥
सूयिग (थो)॥ संवृद्धोऽदन्व न् ॥ दान ४ काया ४ ४॥ क याग्
क याद् क यादो क याद ४ क यादं क यादो क याद ४ क
यादा क यादो मिथ्यादि ॥ सूयिग (थो)॥ नर्व दिविषद् मधुरि

इसुद्ध दादयः॥ अथ अना॥ मृग विदुद वृत्त्यन्य॥ मृ
ग विन मृग वि द मृग विद व मृग विधः मृग विध मृग
विध मृग विधः मृग विध मृग विद्या मित्यादि सृचि
न (थी)॥ ना अथ नाना॥ आत्मा आत्मानो आत्मानः आ
त्मान आत्मानो आत्मानः आत्मानः आत्मानः आत्मानः
मित्यादि सर्व द्वौद आत्मान॥ चर्व अथ न अथ न अथ न

वृक्ष न वृक्ष न यक्ष न उद्य न यास्य न ० त्यादयः॥ नाज न
मद स्य अथ म स्यादि नि अत्मा यो वि (षा) ॥ नाजा नाजानो नाज
नः॥ नाजाने नाजानो नाजः॥ नाज नाज स्या मित्यादि द्वौय न
नाज नाज नि॥ चर्व मूर्ध न उद्य न यक्ष म न ग न महि म न ० त्या
दयः॥ यव न यव स्य रुदः॥ यवा यवानो यवानः॥ यवाने य
वानो यूनः॥ यून यव स्या यव रिः॥ ० त्यादि॥ सर्व द्वौद रुय

वन् ॥ सुयीयूनस्तिनिगिगियस्यसिंमनकलाययुवगि४ मः
मिदग् ॥ ०० गश्चक्रिवर्जिगाहगिब्यस्यस्ययुवगीनदीवग् ॥
वन् ॥ द्ययुवन् ॥ द्यवग् ॥ म्नीयस्यस्यगुनीनदीवग् ॥ ज्वमद्य
वामद्यवानोमद्यवान४ मद्यवानमद्यवानोमद्यानमद्यानाम
द्यवस्यमित्यादि ॥ म्नीयीमद्यानीनदीवग् ॥ यकसोचमद्यवा
न्मद्यवाब् ॥ स्यादयामद्यवान्मद्यवकोमद्यवन४ मद्यवनमद्य

वकोवद्यवग४ मद्यवगामद्यवह्यामद्यवहिनिब् ॥ स्यादि ॥
मियीमद्यवगीय ॥ अर्वन् ॥ द्यस्यमोअर्वाअर्वायस्यअर्वनी
अर्वन४ ॥ ०० स्यादिअर्वनी ॥ यद्वि४ द्यास्यादय४ यन्नाभोय
नान४ यन्नानयन्नानोयथः यथायथित्याः यथिरिः ॥ ०० स्या
दिजर्वमन्नाः मन्नानीमरुजाः मरुकाः ॥ ०० ॥ कर्षाविन्नगवान
यकगयः गदाहस्यथिनकृमिगि ॥ कर्षाविरुब् ॥ दननयकृमिः

नचतुर्नावागदकं॥ अस्मि अस्मि नी अस्मि॥ नि। यूनन। या। अस्मि॥
स्मि त्यां अस्मि रि॥ अस्मि अस्मि त्यां अस्मि त्यां अस्मि अस्मि त्यां अस्मि
स्मि त्यां॥ अस्मि अस्मि अस्मि॥ अस्मि नि अस्मि अस्मि॥ अस्मि अस्मि॥
नर्व दधिना कि अस्मि गद्या॥ वमु वमु नी वमु नियूननयि॥ व
मु ना वमु त्या मि त्यादि॥ संवद्धो ह वमु नर्वं ज रु व सु र्वादि॥ अ
थ वा अस्मि ना नानयं स कलिं ग॥ क वर्ग ना अय सिद्धा॥ ज का ना

ना अस्मि ज गद्या॥ अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि
वा अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि अस्मि
विय ग विय द विय नी विय नि॥ यूननयि॥ विय ना विय द्या मि
त्यादि॥ स्रियि न॥ अय सिद्ध ४ थन ४॥ न थ द ना धन ना थ॥
ना ना॥ साम साम नी सामा सामा नि॥ यूननयि॥ सामा सामा
मि त्यादि॥ सो सामि सामा नि सामा॥ सामा सामा॥ यथ क

नलानयंसकस्यवगिविकल्यननलाय॥४॥रुसाम॥नवनामन्
 नामन्लामन्रुमन्००त्यादय॥जुरुन्मदस्यरुदशजुरु
 ००रुनीजुकीजुरुनिवूननयिजुकाजुरुत्यामित्यादि
 सवृद्धोरुजुरुशकर्मन्मदस्यउकर्मकर्मनीकर्मवियन
 कर्मलकर्मत्यामित्यादि॥साममदवगुजुलायातावाधत्वं
 वि॥४॥नवयश्चनमर्मन००त्यादि॥यवमयवकाना॥४॥जु

लनावक्रमदवाय॥५॥वाक्त्रिनितायवक्रगद्विनायवक्रप॥५॥विद्वान्नात॥४॥

प्रसिद्धा॥४॥प्ररुन्नावात्रमदवा॥४॥वात्रीवात्रियूननयिवात्रा
 वात्यामित्यादि॥सान॥सयिसमद॥सयि॥सयिषीसयिषियून
 सयिषासयिष्यासयिरि॥सयि००सुसदाषाद्याषवगिन००
 त्यस्यद्यावृत्त्याप्ररुन्नाव॥सयि॥सुःसयिसु॥वायत्रचूयत्वंविस्
 ऊनीयस्या॥नवत्राचिसञ्चिसर्वरिस॥५॥चिसयुत्नय॥४॥
 नववयु॥वयुषीवयुंसि॥यूननयि॥वयुषावयुत्यामित्यादि

नवं धनू सचक्रस्य रगय ॥ चक्रसंभदस्य उचन ४ चक्रसीचगा
सियूनत्रयिचक्रसाचगा त्यामिदि स्रियि यत्र द्रय विसर्जनायो
नवं वयस्य यसमि न स न रु स सद स र्वा दया रुका नाना क्रका
नाना यसिद्वानयं सक ॥ वृगि स नाना ४ नयं सक र्शि ॥ ४ ॥
अथ श्रीलिंगः ॥ ॥ जाया ज नानदी लक्ष्मी ४ श्री ४ श्री ह्रमिर्व धूत्रयि ॥ ४ ॥
यूनरु स्रथा ॥ धनू ४ स्व सामाग चनो म्रिया ॥ वाक् सक्रया ४ विष्णु न

इच्च र्वा दयः ॥ अका नानः म्रियां नासि ॥ जाया जा य जाया ४
जाया जा य जाया ४ जाय या जाया त्यां जाया रि ४ जायार्थ जाया त्यां
जाया त्या ४ जाया या ४ जाया त्यां जाया त्या ४ जाया या ४ जाय या ४
जाया नां जाया यां जाय या ४ जाया स्र ॥ रु जाय ॥ नवं यज्ञा दाला
म्रियां सर्व अका नाना ४ अम्बा गदस्य उ संवृद्धी रु अम्बरु अम्बरु
रु अम्बरु र्वा दय ४ ॥ जना गदस्य वि ॥ ४ ॥ जना जन सो जन

लाया रावा वि (गव ॥ नवं ग नीय र न या या नो ह न या ॥ सम्यक्
कमलया लक्ष्मी मदीयुष्यवर्गी मिर्यं ॥ तु ल र द वि द रू की नो क
विठ क या रू पी ॥ वा ग य मी वा न मृ ॥ ग र व डू ल मू चि रू पी ॥ य ची नः
॥ य य ची न रू ग डी नि डा य मी ल या ॥ श्री ग य स उ म उ त्वा र स ला या
रा व ॥ श्री ॥ यि यो यि य ॥ यि र्यं यि यो यि य ॥ यि या यी र्थां श्री रि ॥
यि यो यि य यी र्थां यी र्थ ॥ यि या ॥ यि य ॥ यी र्थां यी र्थ ॥ यि या ॥ यि

य ॥ यि या ॥ यी र्थां यी र्थ ॥ यि यि यि र्थां यि या ॥ यी र्थ ॥ ह यी ॥ ह यि
यो द यि य ॥ न व री की यी य र न य ॥ मी मिर्यो मिर्य ॥ मिर्यं मी
मिर्यो मिर्य ॥ मी ॥ मिर्या मी र्थां मी रि ॥ मिर्यो मी र्थां मी र्थ ॥ मि
या ॥ मी र्थां मी र्थ ॥ मिर्या ॥ मिर्या ॥ मी र्थां मिर्या ॥ मी
या ॥ ह मि ह मिर्यो ह मिर्य ॥ रू काना ना त्व मि ग दा वृ टि ह मि ॥
ह मी ह मय ॥ ह मि र्थ मी ह मी ॥ ह म्या ह मि र्थां ह मि रि ॥ ह

सो दमय दमित्या दमित्य ॥ दम्या ॥ दम ॥ दमित्या दमित्य ॥
दम्या ॥ दम ॥ दम्या ॥ दमी ना दम्या दमी दम्या ॥ दमित्या ॥
दम ॥ अवमुनिमनिमिनाधिकदियह नय ॥ उका ना ना ॥ न
दीवगुयकिया ॥ सिनायानासि ॥ वधू ॥ वधू वधू वधू ॥ वधू वधू
वधू ॥ वधू वधू वधू वधू वधू वधू वधू वधू ॥ वधू ॥ वः
धू वधू वधू ॥ वधू ॥ वधू ॥ वधू ना वधू वधू ॥ वधू ॥ वधू ॥ वधू

धू ॥ अवधनूनमु ॥ कर्क चूर्वदश्यांगदूदानरुसु क ॥ लादि ॥
धू गद धी गद वधू धी उवदिगिधा उवगुलाव ॥ धू ॥ धू वधू
वधू ॥ धू वधू धू वधू ॥ धू वधू धू वधू ॥ धू वधू ॥ लादि ॥ दध ॥
धूनरु गद सवि ॥ धध ॥ धूनरु ॥ धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु
धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु ॥ धूनरु धूनरु धूनरु
धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु ॥ धूनरु धूनरु धूनरु
धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु धूनरु ॥ धूनरु धूनरु धूनरु

वत् ॥ हव वर्षा नयून ह निरुपवद्वयः ॥ न नद लूकानरकन
 हठादानामयिउवाह गायनिषधः ॥ यून ह ४ स्याद्विद्वदायां हः
 नूयन्नगवद्वयाः ॥ अह नूदा ह गाविष्टिर्गंगया सीष्मसूनयिः ॥
 का न ह निभ्ययस्कान क्रियायामयिचव्यग वसून व्यजनन्या
 य वी न मा गा च वी न सू ॥ स्त्रीलिङ्गयदी दू द न नूयं कियु समा स
 वृ कृ ग वृ ग स्य यथ मलि न य ग ॥ कू मा त्री य नी गि क्वि यि यी र्थ ज न

अय न् गियलाय कू मा र्थे य नू वा य । क्वि दो य चा नि का यि स
 लिङ्गं कू न न क्रिया य स्त्री य नू वा य । ग थ स मू दा य र्थ स यि म थ
 दी मां म्भारथ स्त्रा न् अ नि म थ यून न् स्या दि सि द्धं । य थ द न ग द्द
 यं वृ क्ति न यि क्रिय मा स्या नि ग थ च न यि ॥ उ का ना ना । ध नू ग द्द
 ४ ॥ ध नू ४ ध नू ४ ध न व ४ ॥ ध नू ४ ध नू ४ ध नू ४ ॥ ध नू ४ ध नू ४ ध नू ४
 नू रि ४ ॥ ध नू ४ ध न व ४ ध नू ४ ॥ ध नू ४ ध नू ४ ध नू ४ ॥ ध नू ४ ध नू ४ ध नू ४

X

ल्यां धनूय ४ धन्या ४ धना ४ धन्या ४ धनूनां ॥ धनो ॥ धन्यां ॥
 न्या ४ धनूय ॥ ४ धना ॥ नव ॥ क्राकुसिन्धु गगन दय ए गय ४ ॥
 स्वसृ गद्य सा ४ स ४ सका न स्य न कान ॥ नर विनि ॥ ससृ ॥ गिज्ज
 न्यय य ४ स ४ गद्य व ॥ मा ४ गद्य स्य यि ४ गद्य व ॥ मा ४ ४ म्नीः
 लिंग त्वान त्वा रा व ४ ॥ नव ५ या ४ न न न ४ गद्यो ॥ स गद्य स्य न का
 जान ४ स ४ सयो सय ४ सय सयो सय ४ सया सत्यां स रि ४ स

नागय न न म्नी ४ न न व न म्नी ४ न न व न म्नी ४ न न व न म्नी ४ न न व न म्नी ४

३ स्व ल्य उडा काना काय

य स त्यां स य ४ स ४ स त्यां स य ४ स ४ स या ४ स या ॥ स यि स य ४
 स य ॥ ४ स ॥ न द ४ ४ ४ ल ४ स ४ व ४ ॥ न व म न्य यि ॥ न का नानो
 न ४ ४ ४ म्नी ४ व यि य ४ व ४ ॥ उ का नाना आ गद्य ४ ॥ ग ४ स ४ व ४ ॥
 यो ४ यो यो यो ४ यो यो यो यो ४ यो यो यो यो ४ यो यो यो यो ४ यो यो यो यो ४
 य ४ यो यो यो यो ४ यो यो यो यो ४ यो यो यो यो ४ यो यो यो यो ४ यो यो यो यो ४
 ४ यो ४ ॥ न व सा य ४ न य ॥ उ का नाना नो यो ४ स गद्य व ४ ॥

नोऽनादीनावः॥०॥त्यादि॥उक्ताः॥मि०यांस०ना०॥प्र०थ०यं०ज०ना
ना०॥चाना०वाच०ग०द०॥क०म०कू०ष०द०व०ग०॥वा०क०वा०ग०वा०चो०वा०च०॥
वा०च०वा०चो०वा०च०॥वा०च०वा०ग०मि०त्यादि०सू०यि०वा०श०वा०र०॥न०व०ं०गु०व०
प्र०व०त्त०व०य०र०ग०य०॥जा०न०॥स०ज०॥॥०॥स०क०स०ग०स०ज०स०ज०॥स०
ज०स०ज०स०ज०॥स०ज०स०ग०मि०त्यादि०सू०यि०क०शो०॥न०व०ं०गु०व०
ज०॥यू०ज००॥त्य०स्य०उ०यू०ज०न०स०मा०स०न०र्द्य०टी०गि०न०ना०ग०म०॥यू०द०यू०

॥अ०से०यू०॥॥यू०॥यू०॥यू०॥यू०॥०॥त्यादि॥ग०ना०या०वि०ग०म०न०
दि०व०यू०व०व०॥न०व०ं०स०नि०ग०व०ह०ग०यि०व०ग०य०र०ग०य०॥य०न०॥ग०न०
द०॥ग०न०ग०न०द०ग०न०दो०ग०न०द०॥ग०न०दं०ग०व०दो०ग०न०द०॥ग०न०
दा०ग०न०द्यां०ग०न०हि०नि०त्यादि०॥सू०यि०ग०थो०॥ध०न०॥श०धू०॥श०ग०श०
द०॥श०धो०श०ध०॥श०धं०श०धो०श०ध०॥श०ध०श०ध्यां०श०हि०नि०त्यादि०
सू०यि०ग०थो०॥न०व०ं०स०मि०धू०धू०यू०धू०य०र०ग०य०॥न०न०॥य०म०न०न०

दिष्णवदस्य नृपं ॥ नर्वति युष् नृषु तस्य यत्नय ॥
 सा नृसमनसु वधस्य वदतु ॥ नर्वी अयस्य सः प्रिमा
 नस्य यत्नय ॥ सा सगदगदस्य नृपं ॥ सा ४ सा सो सास
 ४ सासं सा सो सास ४ सासा सात्या मित्यादि सूयितासूसा
 ४ सू ॥ ॥ आगि सगद ४ अंगी ४ आगिषो आगिष ४ आ
 गिषं आगिषो आगिष ४ आगिषा आगिषा मित्यादि सू

नत्थे ३
 यि आगी ३ सू आगीसू ॥ सा नृ ४ ॥ उषिक् उषिक् उषि
 हो उषिक् ४ उषिक् उषिक् उषिक् उषिक् उषिक् उषिक्
 मित्यादि सूयिकरवो नर्वी सृष्ट उयान सगदस्य ४ वि
 नामर्थ जनादि सन उन्नदीत्यादिनादत्वं ॥ उयान न उ
 यान ४ उयान हो उयान ४ उयान ४ उयान हो
 उयान ४ उयान सा उयान स्या मित्यादि सूयित

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
अथ लिखितं उच्यते ॥ शुक्रं कीलालया ॥ येन शुचिं
अमलीं स्रवीः । यद्दृष्टं लिखितं कर्त्तुं मा नान्वद
द्रवा ॥ स्रवीः ॥ यं सिंशुक्रं विषयं । म्रियां म्रियामा
दी शुक्राद्यद्वावत् । नयं सकं शुक्रं कलशद्वयम् ॥ अ
कावाका उच्यते ॥ कीलालया ॥ यं सिंसादाद्यद्वयम् ॥

म्रियामपि नयेव ॥ नयं सकं कीलालयं कलशद्वय
म् ॥ ॐ कावाका ॥ शुचिंशुक्रं यं सिंशुक्रं ॥ शुचिं
लिङ्गं ॥ यं सिंशुक्रं अग्निवत् ॥ म्रियां वद्विंशद्वयम् । नयं स
कं शुचिं शुचिनी शुचीनि पुनत्रयि । हमीये कवच
नं नास्ति नृप विष्णवे ॥ यं वद्वायं दाना । नयं सकं
नामिनं स्वयं ॥ नृवागम । शुचिना शुचिर्वा शुचि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ ॥ शुचयः शुचिनः शुचिर्याः शुचिर्यः शुचयः शुचि
नः शुचिर्याः शुचिर्यः शुचयः शुचिनः शुचाः शुचि
नाः शुमिः पूवद्वाव नयूसकपि शुचीनाः शुचीः शुचि
निः शुचाः शुचिनाः शुचिषः ॥ सर्वदोः शुचि दशुचः ॥
नवः शुमतिः शुमतिः शुचनृचिः परुतयः ॥ ॐ नमः
का शुममली ॥ ६४ ॥ शुमलीः शुममलीः शुम

मल्लः ॥ शुमल्लः शुमल्लः शुमल्लः शुमल्लः शुमल्लः
लीर्याः शुमलीरिः शुमल्लः शुमलीर्याः शुमलीर्यः
शुमल्लः शुमलीर्याः शुमलीर्यः शुमल्लः शुमल्लः
॥ शुमल्लः शुमनकदः गतिरुतस्याननुवद्वावः
त्येपिनियादिनामः शुमल्लः शुमल्लः शुमलीर्यः ॥
शुयामपि नवमः ॥ नयूसकः कुचत्वं नदीस्वयं
वद्वावः शुमलिः शुमलिनीः शुमलीनिः ॥ २॥ शुमली

ना. अमर्या. ल्यादि. समुद्धो. दग्मम दग्मम (॥) न
वंसंनानी. अगुली पुरुनय ॥ सुधीः. सुधियो. सुधिय
॥ सुधिर्य. सुधियो. सुधिय ॥ सुधिया. सुधीत्या. सुधीनि
॥ सुधिय. सुधीत्या. सुधीत्य ॥ सुधिय ॥ सुधीत्या. सु
धीत्य ॥ सुधिय ॥ सुधिया ॥ सुधिया. सुधियि. सुधिया
॥ सुधीषू ॥ नवंमिया मयि ॥ नपुंसकं कुत्सत्वं. हादि

स्वयं. पूवङ्गवा. सुधि. सुधिनी. सुधीनि २ सुधिया. सु
धिना ल्यादय ॥ नवं उयार्जिमणी. यवकी. त्य क
की. प्राफली. पुरुनय ॥ तथा सुली नानाधी पुरु न
य ॥ सुधीवन्नया ॥ अद्यय कात्रकात्या मवार्य विः
धिति ल्यव्वीन मनं नै नन. अण्व. नानाधियां अग
नि अन्मवर्ग. दि नानं ०० नि संस्कारा ग्युलय नि ००

द्ववन् ॥ सूय सूयली सूयुलि २ । ठादोस्व नयूव द्वा
उरुयथापिसूयुल्ल सूयुव सूयुल्लोत्थादि ॥ नर्व
यकूयू मगयू पाययूयुह नय ४ ॥ एकावान् ४ क
रुहायूयू सिपुग्नसूगयूद्ववन् म्रियामीपुहययनदी
वन् नयूयू सकं कर्ह कर्हली कर्हलि २ कर्ण कर्ह
ल्लोत्थादि ॥ नर्व नल्लमा ४ नल्लना ४ यकूहा न

युह नय ४ ॥ समासान् विध्वनित्यत्वात्कयल्यया
लावयूयू सिपिहवन् म्रिया माहवन् ॥ नयूयू सकं क
र्हवन् ॥ नर्वसूयिह सूदुहिहयूह नय ४ ॥ ॥ नका
वाका ४ अर्विनगयू ४ ॥ यूसिम्रियाच मगयूद्ववन् ॥ न
यूसकं वाविगयूद्ववन् ॥ वल्लारु ४ ठादोस्व नयूव द्वा ॥ ॥
नेकावान् वद्वेगयू ४ ॥ यूसिवेवन् नयूयू सकं दुस्वः
वा २

नवाविंशद्वयम् ॥ तद्विस्वत्रयं वदन् ॥ वदन् वि. वदन् वि
ली. वदन् वीतिश. वदन् वाया. वदन् विष्णु वृत्त्यादि ॥ नृक
दं विदुः मनसा वदन्ति वदन् वास्यामित्यादि ॥ नृव
सूत्रेयुरुक्तयः ॥ उकावाका अकिशा. दृ४ ॥ मृयूं स
याया. वदन् ॥ नयूं सकं. अकिशू. अकिशूनी. अकि
शूनिश. दादो अकिशूवा अकिशूना. वृत्त्यादि ॥ ॐ ॥

शीलो कथ्यमानो नमानसः ॥

उकावाकः ४ सूत्रोक्तयः ॥ मृयूं सयानो वदन् ॥ नयूं स
कं जस्रत्वं ॥ सनू. सनूनी. सनूनिश ॥ दादो स्वयं. सना
वा. सनूवा ॥ नृव अनी. वदन्ती. नमिक्त (लोकाद्याः) व
दन्त्रे विष्णु (मः) युरुमीनी. यूं वदन् वा नयान् कर्तुं किञ्चित्
॥ ॥ उका ४ स्ववाका ४ मुलिङ्गा ॥ अथ यं उकाभि
लिङ्गा ॥ काका ४ कासुष्टुक. कासुष्टुका. कासुष्टुका

काष्ठशु क ४ काष्ठशु क काष्ठशु को काष्ठशु क ४ काष्ठशु
का काष्ठशु म्यामि त्यादि ॥ सुयि काष्ठशु क काष्ठशु स्व
नर्वमिया मयि ॥ नयूं सक ॥ काष्ठशु क काष्ठशु म का
ष्ठशु को काष्ठशु कि २ ॥ नमी या दोयूं वग ॥ नर्वव दूव
क अल्पव क ॥ अम उ क व नशु क चो व क क य ह
नय ४ ॥ नर्वखा का ४ ग न का ४ द्या ना ४ य ॥ खा के म्पि उ

कनक श्री रा श्री न श्री

लिख ग द ४ ॥ चिगुलिक चिगुलिगं चिगुलिखो चि
गुलिख ४ चिगुलिखं चिगुलिखो चिगुलिख ४ ॥ चिगु
लिखा चिगुलिग्या मि त्यादि ॥ सुयि पथ म क न चि न
या वा ॥ संधा धनं त्ववि ल ग वा र्थ ऊ ना ना ना ॥ नर्वमि
या मयि ॥ नयूं सक चिगुलिक चिगुलिगं चिगुलि
खी चिगुलिहि ॥ नर्वव दू म ख अ म व ख अ म

लख् पुरुनयः॥ गान्काः॥ अंगलूक. अरुवसूग
 गमकगु॥ दान्काः॥ वदुभक्ष. मूलाद्य॥ दान्काः
 यठितलिङ् यठितुङ् पुरुनयः॥ यठितलिङ् य
 ठितलिङ् यठितलिङ्॥ ॐ ह्यादि॥ सृषिककावा
 गमः॥ विकल्पन. द्वाः॥ कटावकीशवसंस्थिति॥ य
 ठितलिङ् यठितलिङ्॥ ॐ वीमियासपि॥ नय
 यठितलिङ् गद

सकं यठितलिङ् यठितलिङ् यठितलिङ्॥ ॐ ॥
 दान्काः॥ अकवात्रगदः॥ अकवाक्. अकवावी.
 ॐ ह्यादि॥ मीपूं संधातुल्यनृयं. कसूत्रगदवगु
 ॥ नयूं सकं अकवाक्. अकवावी. अकवात्रि॥ ॐ
 वीसूवात्र. सूत्रव. अल्पसि. सूत्रवडादनयव
 पुरुनयः॥ प्रात्रगदस्य प्राणवगत्वं॥ प्राद. प्रा

एषो पाञ्च ४। पाञ्चै पाञ्चो पाञ्च ४। पाञ्च पाञ्चा मित्या
दि। सपि पाङ्ग पाख्य ॥ मिया पाञ्च नदीवत् । न
यं सक पाङ्ग पाङ्ग पाञ्च पाञ्चि २। नर्व अष्टात्र
अपात्र परुतय ॥ उदं चगाद स्यात् उ उ द द् उ द द्
उ द द् ४। उ द द् ४। उ द द् ४। उ दीच ४। उ दीचा उ द द्
उ द रि त्रि त्रि त्रि ॥ मिया उ दीची नदीवत् । नर्व स

कं उ द क उ द द् उ दीची उ द द् ॥ विष ग अङ्गीति
विष द् ४। विष द् ४। विष द् ४। विष द् ४। विष द् ४। वि
ष द् ४। विष दीच ४। विष दीचा विष द् ४। मित्या
दि ॥ मिया विष दीची नदीवत् ॥ नर्व सक विष द्
क विष द् ४। विष दीची विष दीचि ॥ नर्व दं व द् ४। व
विषा ग व यं अ न्ना स्व वा दं व द् ४। का विनि स ४

समितित्रयः। सधुद सधु ^{वि}श्रुत्यादि अचूदस्वः सः
धुीव ^०त्यादि ॥ मिया सधुची नदीव ^०॥ नयू सक सधु
तु सधुग अकदित्वं वा सधुची सधुश्रीत्यादि ॥
नवी सम्यद सधुश्री समीव ^०त्यादि ॥ मियाद मी
र्याश्री मियाश्री मियाश्री मियाश्री मियाश्री मियाश्री ॥
मियाश्री ^०त्यादि ॥ मिया मियाश्री नदीव ^०॥ नयू

सक मियाक मियाश्री मियाश्री मियाश्री ॥ ॐ ॥
यूजार्थवर्तमानस्य अंतर्कर्मस्य लाया नरुव
मि अकावस्य सधुव ॥ नन्वाहल ॥ अस्यव ॥ दि
वचनं भातुयनिग्रहार्थ ॥ उर्वक्षदवक्षक्ष उर्व
दृष्टी दवक्षदृष्टी पाददवक्षदृष्टी ॥ कथं
रगतक्ष अन्वागया लायावाधनं नन्वदादागय

॥ मूलवृत्. गद्यस्य उ. सीया गंधर्ध ठ वृ. निगलाय
रुग वृत्तानं आदीनां तुल्यं ॥ मूलवृत्. न वृत्तिया म
पि ॥ नयं सकं मूलवृत्. मूलं उ. मूलवृत्. मूलवृ
त्ति ॥ काना उद्यनं ॥ गंधर्ध वृत्तमीति क्रियते विषुः
स्त्रीत्यादिना क्रिय दीर्घा रसं सात्र वृत्तकृत् गूढो यं
वमं वृत्ति कृत्ता न स्या गका व ४ न न ४ म्नी यं स या चि

गद्यप्रज्ञ ३

[illegible]

श्यामिषादि. नुर्वंमि यामयि ॥ नयूं सकंधानरुट्
स्रनरुउ. धानरुड्डी. धानरुड्डी ॥ नुर्वं. बटक
रुड्डी. नरुड्डी. काण्ययचिमूड्डी. ऊं वं. विजा
ड्डी. पुरुड्डी ॥ साधूमरुड्डी. गदस्यरुड्डी. दृष्ट ॥ संधाग
नस्यलाय ॥ साधूमरुड्डी. साधूमरुड्डी. साधूमरुड्डी. सा
धूमरुड्डी ॥ साधूमरुड्डी. साधूमरुड्डी. साधूमरुड्डी ॥ साध

मरुड्डी. साधूमरुड्डी. मिषादि ॥ नुर्वंमि यामयि ॥ नयूं स
कं. साधूमरुड्डी. साधूमरुड्डी. साधूमरुड्डी. साधूमरुड्डी ॥
टाना ॥ रि. दाट्. रि. दाउ. रि. दाटी. रि. दाट् ॥ रि.
दाटी. रि. दाटी. रि. दाट् ॥ रि. दाटा. रि. दाट्. मि
षादि ॥ नुर्वंमि यामयि ॥ नयूं सकं ॥ रि. दाट्. रि.
काउ. रि. दाटी. रि. दाट् ॥ नुर्वंमि यामयि ॥ नयूं सकं ॥ रि. दाट्. रि.

1194

七

विक
काठ

सूषि.सूगलसू सूगलसू.सूगलसू॥ नुर्वंमिथाम
पि॥ नयूं सकं.सूगल.सूगली.सूगंति.००त्यादि॥ न
वं.धनात्पुरुतय ४॥ १०॥ ताका ४॥ अग्निचिह्नं
४। मीयूं सयाम्मन्तुह्नाद्वत् ॥ नयूं सकं.अग्निचि
ह्.अग्निचिती.अग्निचिन्ति॥ नुर्वंमन्तुह्नाद्वत्.मान
जिह्पुरुतय ४॥ आयुष्मन्तुह्नाद्वत् विष्णु ४॥ आ

रतागयनेमस्तुलननंसेवन्ताकसः ४ वीसन्तुह्निसेवन्ताकसः ४ नीनयन् ॥ श्रीकृष्णाय नमः ४
अनितोभनायनम १ तागयनेमस्तुलननंसेवन्ताकसः ४ वीसन्तुह्निसेवन्ताकसः ४ नीनयन् ॥

यूष्मान्.आयुष्मन्.आयुष्मन् ४॥ आयुष्मन्ः
आयुष्मन्.आयुष्मन् ४। आयुष्मन्.आयुष्मन्
मा। आयुष्मन्.विष्णु.सूषि.आयुष्मन्.आयु
ष्मन् ॥ सर्वदो.ह्.आयुष्मन् ॥ मिथामायुष्मन्
नदीवत् ॥ नयूं सकं.आयुष्मन्.आयुष्मन्.आयु
ष्मन्.आयुष्मन् ॥ नुर्वंमन्तुह्नाद्वत्.धनवन्तुह्नाद्वत्

रतागयनेमस्तुलननंसेवन्ताकसः ४ वीसन्तुह्निसेवन्ताकसः ४ नीनयन् ॥ श्रीकृष्णाय नमः ४

त्यादि॥ म्रियां अंती नदी वत् ॥ नयं सक अदत्
 अदत् अदती अदति ॥ नव धन इह न ॥ ०० त्या
 दय ॥ सादी नां दुदादी नति राती राती मी रा
 ती राती कृत ॥ निवि (ग) व ॥ ॥ शक न शक
 दु धूटि अख सा दान वत का व ॥ शक न शक द
 शक न शक न ॥ म्रियां शकती ॥ नयं सक शक

शकती शकति ॥ नत ददन दधन विद्यन जि
 कन विभन ॥ ०० त्यादि ॥ अश्या वीग न द नाना अ
 दन शय वरूप क्रिया ॥ मयथा सन्धन वृधन
 मन्धन की वन पुरु मय ॥ वृयादी नां दुद वन
 शय वरूप क्रिया रुचिन ना नामयि ॥ था का ॥ अ
 ग्नि मथ ग द ॥ अग्नि मत् अग्नि मद् अग्नि मत्

अग्निमथ ४॥ म्रियां अग्निमथी ॥ नयं सकं अग्नि
मत् अग्निमद् अग्निमथी अग्निमन्त्रि ॥ नवै सम
दुमथ हि द्वा नाथ पुरु मय ४॥ ॥ दान्ना ४॥ काष्ठ
हिद् काष्ठ हिन् काष्ठ हि दी काष्ठ हि द ४॥ ॐ त्यादि
॥ म्रियां तथैव ॥ नयं सकं काष्ठ हिन् काष्ठ हिद्
काष्ठ हि दी काष्ठ हिन्दि ॐ त्यादि ॥ नवै नै नै नै नै

द् गगनमु विद् पुरु मय ४॥ धान्ना ४॥ गगन नवृध्
गवस्य ॥ गगन नवृत् गगन नवृद् गगन नवृत् ॥ ग
गन नवृध ४॥ गगन नवृध् गगन नवृत् ॥ गगन नवृध ४
गगन नवृध गगन नवृत् ॥ गगन नवृत् गगन नवृत् ॥
॥ नवै म्रियामयि ॥ नयं सकं गगन नवृत् गगन नवृ
द् गगन नवृध गगन नवृत् ॥ ॐ त्यादि ॥ नवै जगत्
न २

साध्. उादनसिध्. पुरु नय ४॥ गत्व वृध्. गदस्य तु-
गत्व तुग. गत्व तुद. गत्व वृध्. गत्व वृध् ४॥ गत्व वृध्
गत्व वृध्. गत्व वृध् ४॥ गत्व वृध्. गत्व तुद ४॥ स्रयि ॥
गत्व तुत्स. गत्व तुध् ॥ उर्व मि यामयि ॥ नयं सक
गत्व तुग. गत्व तुद. गत्व वृध्. गत्व वृध् ॥ उर्व रुस्ति
वध्. मम्मवृध्. पुरु नय ४॥ नाना ४॥ धनिन् गद ४॥

गिन् गदवृ ॥ म्रिया धनिनी ॥ नयं सक. धनि. ध
निनी. धनीनि ॥ ह्यादि ॥ संवाधन. रुध निन् ॥ उ
र्व. गुतिन्. मातिन्. वाग्मिन्. द्रुतिन्. पुरु नय ४॥ धी
वन गदस्य ॥ धी वा. धी वानो. धी वान ४॥ धी वान. धी
वानो. धी वृ ४. धी व्रा. धी वस्या. धी वरि वि ह्यादि ॥ वा
जवृ ॥ म्रिया. धी वरी. धी वयो नदी वृ ॥ नयं सक

धीयः धीवनीः धीव्रीः धीवानि ॥ नर्वः पीवन् आवन् ॥
 पात्रदृग्बन् गदृष्टिः आत्मन् गदृष्ट ॥ म्रियाः
 पात्रदृग्बनी ॥ नर्वसकः कर्मन् गदृष्ट ॥ नर्वनाज
 यूधन् पुरुषयः ॥ ॥ पात्राः ॥ मद्यलियः म्रिय
 सयाः ककुपः गदृष्ट ॥ नर्वसकः मद्यलियः म
 द्यलियः मद्यलिपीः मद्यलिम्वि ॥ नर्वः वद्वल

य्. दिवास्वप्. धनगुप्. अकृत्रलियप्. पुरु नय ४॥
 वक्तृप्. ४। दस्य वि०। य ४ समासा कवि० धननि ल्यत्त्व
 न्॥ वक्ताय. वक्ताव्. वक्तायो. वक्ताय ४। वक्ताय
 यक्तायो. वक्तृय ४। वक्तृया. वक्तृय इयं. वक्तृय इति ४॥
 वक्तृयम्. यक्तृयम्॥ नृवीमि यामपि॥ नयं स कं. वक्तृ
 य्. वक्तृव्. वक्तृयी. वक्तृमि॥ नृवीस्वप्. पुरु नय ४।

वदक्यां वदकृ ४।३

रुना ४॥ अविह रुना ॥ अविह य् अविह व् अ
 विह रुो अविह रुहा अविह रुं अविह रुो अविह
 रुहा अविह रुा अविह रुां अविह रुि विहादि ॥ स
 पि ॥ अविह य् अविह रु ॥ नर्वमि याम पि ॥ नयं स
 क अविह य् अविह व् अविह रुो अविह रुि ॥ न
 र्वमात उरु पुरु नय ४॥ ॥ वा नाः ॥ की व हा दस्य ॥
 १० अविह रुं ॥ कविह रुं नी उरु ४॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कीय् कीव् कीवी कीव ४॥ कीय् कीवी कीव ४॥ की
 वा कीयामि विहादि ॥ कीय् कीरु ॥ नर्वमि याम
 पि ॥ नयं सक कीय् कीव् कीवी कीवि ॥ ॥ ॥ ॥
 यश्च मवति अकल वकाय स्याद्विधी यम ननु
 वग्नीयस्य ॥ नर्वमि याम पुरु नय ४॥ ॥ रुना ४ ॥
 रुना नृरु नस्य मुयं सया ४ कक रुग दस्य व

दूर्य॥ नयूं सकं कृणानुष्टुप् कृणानुष्टुब् कृणानु
ष्टुली कृणानुष्टुक्लि ॥ नवंगर्दहयमक्लिप् ॥ गर्द
रु दृष्टककुरु पुरु मय ॥ ॥ मान्ना ४ ॥ पुष्पम
नीति पुष्पम नस्य पुष्पन् पुष्पमो पुष्पम ४। पु
ष्पमं पुष्पमो पुष्पम ४। पुष्पमा पुष्प क्त्वा पुष्प
क्लि विह्यादि ॥ नवंग्रियामपि ॥ नयूं सकं ॥ पु

गभन् पुष्पमी. पुष्पमि ॥ नर्वपकान्. पुरुन य ४ ॥
 अथानकहाका ४ ॥ याना १ पुसि ह्व ४ ॥ नरुाक ४ ॥ म
 ऊगिन्नगद ४ मीयं सयाग्निन्नगदवन् ॥ नयं सक
 मऊगी ४. मऊनी मऊगिनि ॥ ७ ॥ लानका ४ ॥ यति
 गरुन्. यति गरुलो. यति गरुत्तु. यति गरुत्तु ४ ॥
 नर्वमि या मपि ॥ नयं सक. यति गरुन्. यति गरु

हली. यथिह हलि ॥ ॥ वा ना ४॥ वि मला यो न सि
नि नि व द्वा वि दि ४॥ श्रीयूं सया ४॥ दि व्ग म द्वा व न् ॥ न
यूं स क. वि मल य. वि मल दि वी. वि मल दि वि. ॐ
त्या दि ॥ नु वं सू दि व् पुरु न य ४॥ ॥ ग्ना ना ४॥ द्वा
द्व दि ग् श्रीयूं सया ४॥ दि ग् म द्वा व न् ॥ न यूं स क ॥
द्व द्व दि क्. द्व द्व दि ग्. द्व द्व दि गी. द्व द्व दि जि ॥ नु वं

दी र्घ दि ग् म द य ४॥ तथा ह वा द्वा ग्. या द्वा ग्. ना द्वा
ग्. ना द्वा ग्. अ न्या द्वा ग्. पुरु न य ४॥ मूल द ग्. ग
द स्य तु वि ग् म द ४॥ यूं सि. मिया ४॥ मूल द द्. म
ल द द्. मूल द (मे. मूल द ग् ४॥ ॐ त्या दि. स वि
ग्. म द्वा व न्. वि ग् म यं जन या उ त्वं ॥ न यूं स क
मूल द द्. मूल द द्. मूल द गी. मूल द जि ॐ त्या

दि॥ नर्वविधुतिशदय॥ ॥ षान्ता॥ मीयुं स या
 ॥ वत्तमृषणदृ॥ द्विषणवृत्त॥ नयुं सकं वत्तमृ॥
 वत्तउवत्तमृषी वत्तमृषि॥ नर्वषत्तिदृयुत्ततय
 ॥ दधृषणदृस्य दधृक दधृग दधृषी दधृष॥
 ॥ त्यादिमिग्या॥ नयुं सकं दधृक दधृग दधृ
 षी दधृषि॥ ग्रामनीसुगदस्य॥ ग्रामनिनी॥ ग्राम
 ॥ ग्रामायग्रामरुद्रा यत्रा सवत्ता श्रवद हा वद्युना थायना थायना

गोपनीयम्

निनीषी ग्रामनिनी ॥ ग्रामनिनी क्रीमित्यादि॥ नयुं
 सकं ग्रामनिनी॥ ग्रामनिनीषी ग्रामनिनीषि॥ न
 र्वं शकुतिगीस काणुल्लुत्तुयुत्ततय॥ कटचिकी
 सगदस्य संयागमकस्यलाय॥ सलायवदस्यविम
 ऊनीय॥ कटचिकी॥ कटचिषी कटचिकी क्री क
 टचिकीषू॥ नर्वमिग्या॥ नयुं सकं कटचिकी॥

कटचिकीर्षी कटचिकीर्षि ॥ उर्व रात्र जिहीष स मू
दक्षिणीष ०० त्यादि ॥ ॥ रुकावा ना ४ ॥ मांसयि य
क्ष मस्य मांसयि य क मांसयि य म मांसयि य क्षी
मांसयि य म मांसयि य क्ष ०० त्यादि ॥ उर्व सि
यामयि ॥ न यू सक ॥ मांसयि य क मांसयि य म
मांसयि य क्षी मांसयि य क्षी ॥ ॥ मा ना ४ ॥ न

स्य ॥ नस्ति वंस ॥ नस्ति वान् नस्ति वां सो नस्ति वां
स ४ नस्ति वां स नस्ति वां सो नस्ति व ४ नस्ति वा न
स्ति व क्षी नस्ति व स ॥ स वा ध न द नस्ति व न ॥
सि यी नस्ति वी न दी व न ॥ न यू सक नस्ति व न न
स्ति व द नस्ति व वी नस्ति वी वि ॥ ॥ उर्व मू ये पि
वी स वि दं स पुरु न य ४ ॥ ॥ अथ ०० य ना ना

शा. (ग्रयन्म. न. स्य. (ग्रयान्. (ग्रयां सो. (ग्रयां सः॥
(ग्रयां सः. (ग्रयां सो. (ग्रयम्॥४. (ग्रयसा. (ग्रया स्थान
(ग्रयः॥४॥ (ग्रयन्॥ मि. या. (ग्रय सी न दी व न
॥ न र्पु स क ॥ (ग्रयः॥ (ग्रय सी. (ग्रयां सि॥ न र्पु स
यन्म. ग वी यन्म. य टी यन्म. पुरु न यः॥ उ खा या
मि स न क् उ कि य. अ नू र्प ग ला यः॥ उ खा मु नू

उ खा मु द. उ खा मु सो. उ खा मु सः॥ उ खा मु र्प. उ खा मु
॥४॥ मि. यो म यि त (ये व ॥ न र्पु स क. उ खा मु सी. उ खा मु
सि॥४॥ मि. वि. (ग. षः॥ न र्पु यन्म. धि स पुरु न यः॥४॥ ॥
ला काः॥ अ नू या न ॥४॥ ४॥ सु र्पु स याः॥ उ या न ॥४॥ ४॥
व न ॥ अ नू या न न. अ नू या न न. अ नू या न न. अ नू या
न न. अ नू या न न. अ नू या न न. अ नू या न न. अ नू या न न. ॥॥

नपुंसकं अनूया नदी अनूयानं हि ॥ नूतिविरा
ष ॥ अमदह ॥ द ॥ नस्य ॥ अमधक अमधग ॥ अ
॥ अमदहो अमदह ॥ अमधग ॥ अमधक
अमधख ॥ एवमियामयि ॥ नपुंसकं ॥ अमदहो
अमदहि नूतिविराष ॥ एवमनद ॥ अमदह
पुरुनय ॥ एववा ॥ द ॥ एववा ॥ एववा

एववाहो एववाह ॥ एववाहो एववाहो एव
ह ॥ एववाहो एववाहो एववाहो नित्यादि ॥ मिययि
होहो नदीवह ॥ नपुंसकं एववाह एववाह एव
हो एववाहि ॥ ॥ अनवग्नस्य नस्य दुःशीयति ॥
उत्तायवाह मूलमाह ॥ अस्माकनु उह ॥ एववाह ॥
मथनीय ॥ उरुयथयि वात्रिवाह ॥ दस्य वायु

दृष्टा वायुदा ॥ ॐ ह्यादि ॥ ॥ पून ४ कान्ता ४ ॥ ॥ गमत्र
दृष्टा दृष्टा ॥ गमत्र ४ ॥ गमत्र ४ ॥ गमत्र ४ ॥ गमत्र ४ ॥ गमत्र ४ ॥
वैश्विण्यां अयि ॥ नये मक ॥ गमत्र ४ ॥ गमत्र ४ ॥ गमत्र ४ ॥ गमत्र ४ ॥
पुर्वमासयिय दृष्टा दृष्टा ॥ ॥ वायुलिङ्ग ४ ॥ समाका ४
॥ ॥ ॐ दाना सर्वनामा ॥ सर्वविश्व ॥ उत्त उत्त
य अन्य अन्यगत्र ॥ ॐ गत्र ॥ उत्त गत्र ॥ उत्त गत्र ॥ उत्त गत्र ॥

नमः समसिम पूर्वयनावन दक्षिणावन यवाध
वालि शुवस्त्रायामसंज्ञाय ॥ स्वमज्ञातिवनाख्याय ॥ ॥
अननवद्विया ॥ गमयसंज्ञानया ॥ ४ ॥ वृत् ॥ एत ॥ गद ॥ य
द ॥ एत ॥ अद ॥ ॐ दम ॥ किम ॥ एक ॥ द्वि ॥ यूष्म ॥ अ
स्म ॥ एत ॥ ॥ सर्व ४ सर्व ॥ सर्व ॥ सर्व ॥ सर्व ॥ सर्वान् स
र्वान् सर्वान् सर्वान् ॥ सर्वान् सर्वान् ॥ सर्वान् सर्वान् ॥ सर्वान् सर्वान् ॥

सर्वस्मान् सर्वस्याम् सर्वस्य ४। सर्वस्य सर्वथा ४। सर्वथा
सर्वस्मिन् सर्वथा ४। सर्वेषु ॥ मूलि १५५। वाङ्मा ४। द्रवत् ॥
सर्वस्य सर्वस्या ४। सर्वस्या ४। सर्वस्मां सर्वस्मिन् ००। ति
द्रवति आसिदति ॥ ४५४ ॥ नयूसकं सर्वं सर्वं सर्वं
नि यूनवयि ॥ अथ य सर्वनाम्न स्वराद न्यात् यूर्वा
४। ००। ति कयत्यययि सर्वकं सर्वको सर्वकं

००। त्यादियूर्ववत् ॥ म्रियां सर्विका सर्विग द्रवत् ॥ वि
४५४। सर्ववत् ॥ उरुग द्रवितवत्ता न ४। उरु २ उरु
स्यां ३ उरुया ४२। ह उरु ॥ म्रियां अरु ॥ उरु उरु
उरुस्यां उरुस्यां उरुस्यां उरुया ४ उरुया ४ ॥ न
यूसकं उरु उरु ॥ ४५४। यूर्ववत् ॥ अकि उरुको
म्रियां उरुको क्रीवयि उरुको ॥ उरुयग द्रवत्ता व

वना ना व इ व च नान्क ॥ उरु ग द द य य ल य स
मादि ला न ॥ स च ति वा रु गा व य व र द ॥ अ वि रु
गा व य व र द ॥ ति वा रु गा व य वा (थ न क व च न
न ॥ अ वि रु गा (थ व इ व च नान्क ॥ उरु य ४ उरु य
उरु या ४ अ ल्या द व ॥ (ग र्थ सर्व व न ॥ उरु य ५ उरु
यानि त्या दि ॥ म्रिया ५ उरु यी न दी व न ॥ न यूस क उ

रु य ५ उरु यानि ॥ अ क उरु य क ४ न न ४ म्रिया उ
रु यि का उरु य क क ल ॥ अ न्य ग द ४ यूसि स च
ग द व न म्रिया स च वि न ॥ न यूस क अ न्या द म्रि
४ ॥ अ न्य न अ न्य अ न्या नि ॥ अ कि अ न्य क न अ क
अ न्य क ४ म्रिया अ न्य का न यूस क अ न्य क न ॥
उ व स न्य न न ० न न क न न क न स न न न न